उपसंहार

उपसंहार

उपन्यास आज साहित्य की सबसे लोकप्रिय एवं सशक्त विधा है। आधुनिक स्माज के विकास के साथ ही साहित्य की यह धारा भी विकसित एवं विस्तृत हो रही है। मानव-मन में सदैव दो विपरीत भाव विद्यमान रहते हैं। एक ओर वह प्रेम करता है तो दूसरी ओर घृणा। वह स्वयं की सुरक्षा के लिए भी भयभीत है। मानव व्यवहार को समझना हो तो बिना मनोविज्ञान के संभव नहीं। मनोवैज्ञानिकता मन का विज्ञान है। मनोवैज्ञानिकता के द्वारा ही मानव मन तथा उसके कार्यों को समझा जा सकता है। मनुष्य के प्रत्येक कार्य का तथा व्यवहार के पीछे के फोर्स का पता सिर्फ मनोविज्ञान ही लगा सकता है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में मनोविश्लेषण का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। मन का अज्ञात भाग दमित इच्छाओं तथा वासनाओं का भांडार है। प्रेम, स्नेह, प्रीति आदि का संबंध लिबिड़ो से है। व्यक्ति को सुख की अनुभूति कराने वाले समस्त कार्यों का संबंध कामशक्ति से है। युवा अवस्था में व्यक्ति का एक ओर कामुक विचारों की ओर आकर्षित होना तथा दूसरी ओर आत्मकेंद्रित होना, तो कभी भय भावना से पलायन करना सामान्य पाठकों की समझ से परे है। साहित्य में जीवन के संघर्षों-समस्याओं से मानसिक प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न हमारे भावों, विचारों, मनोविकारों, राग-द्वेषों की सहज कलात्मक अभिव्यक्ति होती है। मनोविज्ञान व्यक्ति मन का, स्वभाव का विश्लेषण करता है। अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में मानव के विभिन्न मनोविकारों, मनोविकृतियों को अभिव्यंजित किया है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत 'अज्ञेय के व्यक्तित्व तथा कृतित्व' पर प्रकाश डाला है। प्रेमचंद्र जी के बाद यदि उपन्यास को किसी ने नई दिशा दी तो वे हैं अज्ञेय। 'अज्ञेय' इस नाम को बहुत से लोग उपनाम न समझकर इसे पूरा नाम ही समझते हैं। अज्ञेय जी का जन्म सात मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जनपद के कसिया पुरातत्व शिबिर में हुआ था। उनके मन में माँ की अपेक्षा पिता के प्रति आकर्षण अधिक दिखाई देता है। उनका अधिकांश समय अध्ययन में व्यतीत होता था। उनका वैवाहिक जीवन, जिसे सफल तो नहीं कहा जा सकता । उनका तीन बार विवाह हुआ है। अज्ञेय जी स्पष्टवादी स्वभाव के थे।

हिंदी साहित्य-जगत् में अज्ञेय जी ही का प्रदेय विशिष्ट महत्त्व की चीज है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और निबंध आदि सभी विधाओं से हिंदी साहित्य के भंडार को समृद्ध बनाया। अज्ञेय जी का जीवन विचित्र संयोगों का संगम रहा है। एक ओर साहित्य के प्रति अटूट रुचि, तो दूसरी ओर बमबाजी और विषैले रसायनों का अध्ययन यानि क्रांतिकारिता, यायावरी प्रकृति, जेल जीवन, नजरबंदी आदि के विलक्षण संयोग ने उनको साधारण नहीं रहने दिया। उनके व्यक्तित्व में अजीब-सी विलक्षणता आई और इसी विलक्षणता के कारण वे एक प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित कथाकार बन गए और उन्हें इसीलिए साहित्य अकादमी ज्ञानपीठ और स्वर्णमाल पुरस्कार प्राप्त हुए। वे पूरी तरह से हिंदी सहित्य के प्रति समर्पित दिखाई देते हैं।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत अज्ञेय जी के उपन्यासों का सामान्य परिचय दिया है। अज्ञेय जी का पहला उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' उनके ही शब्दों में, 'घनीभूत वेदना की केवल एक रात में देखे हुए विजन को शब्द्बद्ध करने का प्रयत्न है।'

यह एक व्यक्ति प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास का विषय व्यक्ति 'शेखर' है। इस उपन्यास का पहला भाग बालमनोविज्ञान का दस्तावेज है, जिसमें लोगों की दृष्टि इस ओर आकर्षित की गई है कि 'शेखर' जैसे जिज्ञासु शिशु के साथ माता पिता, बहन आदि का व्यवहार कैसा होना चाहिए ? यदि व्यवहार अनुचित एवं प्रतिकूल हुआ, तो प्रत्येक शिशु के मन में 'शेखर' की ही तरह माँ के प्रति घृणा का भाव पैदा हो सकता है। 'शशि' का पूरा जीवन 'शेखर' को बनाने में ही चुक जाता है। वह एक साथ बहन, माँ ओर पत्नी का-सा प्यार प्रदान करती है जो कम ही संभव होता है। 'शेखर' और 'सरस्वती' का भी प्रेम अपने आप में निराला है।

'सरस्वती' धीरे-धीरे 'शेखर' के लिए सरस बन जाती है और 'शेखर' का 'सरस्वती' के प्रति प्रेम आंतरिक होकर अति गहरा हो जाता है।

'शेखर : एक जीवनी' शेखर की बचपन से लेकर युवावस्था तक ही घटनाओं और उसके बैद्धिक संघर्ष की कथा है। शेखर एक जिज्ञासू , कुंठित और विद्रोही व्यक्तित्व है। शेखर में सभी अच्छे बुरे गुणों का समन्वय हो गया है। दूसरा प्रमुख पात्र शशि, जो पूर्णत :

शेखर के प्रति समर्पित है। शशि शेखर की प्रेरणा है। वह शेखर के लिए अनेक शारिरिक और मानसिक यातनाओं को सहती है। उपर्युक्त सभी बातों को देखकर कहना उचित ही होगा कि विद्रोही शेखर को हमारे सम्मुख प्रस्तुत करने में अज्ञेय जी का 'शेखर : एक जीवनी' पूर्णत : सफल उपन्यास है।

'नदी के द्वीप' अज्ञेय जी का दूसरा उपन्यास है। उपन्यास एक दर्द-भरी प्रेम-कहानी है, जिसकी कथा 'शेखर : एक जीवनी' की अपेक्षा अधिक सुव्यवस्थित तथा प्रवाहपूर्ण है। यह भी एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। भुवन, चंद्रमाधव, गौरा ओर रेखा ये चारों इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं। पात्रों के मनोविश्लेषण को महत्वपूर्ण मानकर अत्यंत नगण्य कथावस्तु के सहारे 415 पृष्ठों का बृहत उपन्यास लिखना प्रतिभासंपन्न लेखक का ही काम हो सकता है। संवाद और भाषाशैली की दृष्टि से यह बहुत ही सफल रचना है। देश, काल, वातावरण की दृष्टि से 'नदी के द्वीप' पूर्णत : असफल रचना रही है। इस उपन्यास में अंकित प्रेम में आत्म समर्पण, आत्मदान एवं त्याग की प्रधानता दिखाई देती है।

'अपने-अपने अजनबी' अज्ञेय जी का तीसरा उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रमुख विषय 'मृत्यु' से साक्षात्कार है। इसकी कथा सुव्यवस्थित है। इस उपन्यास के पात्र विदेशी हैं। और समाज से जुड़े हुए नहीं प्रतीत होते हैं। सेल्मा और योके इन प्रमुख दो पात्रों के द्वारा ही पाश्चात्य और पौर्वात्य संस्कृति को अज्ञेय जी ने हमारे सम्मुख रखा है। संवादों में दार्शनिकता का ही पुट विद्यमान है। देश, काल, वातावरण की दृष्टि से 'अपने-अपने अजनबी' में भी अज्ञेय जी को पूर्णत : असफलता मिली है।

प्रस्तुत तीनों उपन्यासों का विवेचन विश्लेषण करने के पश्चात निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि कथानक की दृष्टि से अज्ञेय जी को तीनों उपन्यासों में काफी सफलता प्राप्त हुई है। उपन्यासों के सभी पात्र मनोवैज्ञानिक हैं तथा सभी पात्र शिक्षित भी हैं। संवादोंमेंभी मार्मिकता रही है। लेकिन देश, काल, वातावरण की दृष्टि से बहुत कुछ असफल रहे हैं।

तृतीय अध्याय 'मनोवैज्ञानिकता : स्वरूप विवेचन' में उपन्यास और मनोवैज्ञानिकता के संबंध पर प्रकाश डाला है। मनोवैज्ञानिकता की विभिन्न परिभाषाओं से लेकर उसके स्वरूप, तथा विभिन्न प्रकारों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। मनोविज्ञान का अर्थबोध

बताया है। भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाओं का अध्ययन करने के पश्चात संक्षेप में मनोविज्ञान की परिभाषा इस प्रकार की है - ''मानव मन और उसके व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान ही मनोविज्ञान है।'' मनोवैज्ञानिकता का अर्थविस्तार तो बहुत ही व्यापक बनाया जाता है।

मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को आधुनिक दृष्टिकोन से स्थापित किया है, जिसमें मनुष्य और उनका व्यवहार, उनकी बुद्धि, आत्मा, चेतना, संवेदना तथा विचार इन सभी बातों को समाविष्ट कर दिया है। मनोविज्ञान के विकास में अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अपना योगदान दिया है। उसमें फ्रायड, एडलर, युंग आदि मनोवैज्ञानिक प्रमुख हैं। मनोवैज्ञानिकता के संरचनावाद, प्रक्रियावाद, व्यवहारवाद, गेस्टाल्ट मनोविज्ञान तथा मनोविश्लेषण फ्रायड़ आदि प्रमुख संप्रदाय हैं।

वर्तमान परिस्थिति में विषमताओं से युक्त जीवन में मानसिक विकारों का अध्ययन करने के लिए मनोविज्ञान का ही सहारा लिया जाता है। मनोविश्लेषण मानसिक चिकित्सा क्षेत्र में पर्याप्त सुधार हुए हैं। मनोवैज्ञानिकता मानव व्यवहार का विज्ञान है। मनोवैज्ञानिकता के बाल-मनोभाव, किशोर-मनोभाव, युवा-मनोभाव, प्रौढ़-प्रौढ़ा के मनोभाव, वृद्ध-वृद्धा के मनोभाव यह प्रमुख रूप माने जाते हैं। मनोवैज्ञानिकता के प्रमुख प्रकारों पर प्रकाश डाला गया है।

मनोविज्ञान का महत्त्व निर्विवाद सिद्ध होता है। मानसिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना ही आधुनिक मनोविज्ञान का प्रमुख लक्ष्य हैं। मनोवैज्ञानिक फ्रायड़ ने मन को वैज्ञानिक सिद्धांत के आधार पर विश्लेषित किया और मन के गत्यात्मक पहलू और स्थलरुपरेखीव पहलू ऐसे दो पहलू निर्धारित किए हैं। अतः मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विज्ञान है, जो मानव की चेतनावृत्ति के कार्य करने की प्रवृत्ति की व्यथा करता है। अंत में निष्कर्षत : हम कह सकते हैं कि मानव-मन का विश्लेषक मनोविज्ञान है। आज का मनोविज्ञान व्यवहार की वैज्ञानिक जाँच से संबंधित है जिसमें व्यवहार के दृष्टिकोण में वह सब भी संबंधित है जिसको आरंभ के मनोवैज्ञानिक अनुभव के रूप में लेते हैं।

चतुर्थ अध्याय में 'अज्ञेय के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता' का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

'शेखर : एक जीवनी' उपन्यास में शेखर और शशि इन दोनों पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। शेखर 'शेखर : एक जीवनी' का नायक है। शेखर में सभी अच्छे-बुरे गुण विद्यमान है। बचपन से ही जिज्ञासू शेखर के मनपर प्रत्येक घटना गहरा परिणाम करती है। जिज्ञासावश वह हर घटना या दृश्य के बारे में जानने की कोशिश करता है, लेकिन कोई भी उसे सही जानकारी नहीं देता। इसी कारण वह कुंठित बनता है। परिणामस्वरूप वह अहंवादी, विद्रोही तथा कुंठित बनता है।

शशि 'शेखर : एक जीवनी' का प्रमुख स्त्री पात्र है। शशि का पूरा जीवन शेखर को बनाने में ही चुक जाता है। वह एक साथ बहन, माँ और पत्नी सा प्यार प्रदान करती है जो कम ही संभव होता है। शशि को शारीरिक और मानसिक यातनाओं का शिकार होना पड़ता है। शशि त्याग की प्रतिमूर्ती, द्वंद्व में उलझी हुई तथा विवेकी नारी है। अज्ञेय ने शेखर और शशि के माध्यम सें 'शेखर : एक जीवनी' उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला है।

'नदी के द्वीप' उपन्यास में भुवन, चंद्रमाधव, रेखा और गौरा ये चारों के चारों प्रमुख पात्र है। इन पात्रों का अज्ञेय ने मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। भुवन इस उपन्यास का नायक है। भुवन शिक्षित, कर्तव्यों के प्रति सजग, मानसिक उलझन में उलझा हुआ पात्र है। वह रेखा और गौरा से प्यार करता है। वह मानसिक उलझन तथा द्वंद्व में फँस जाता है। उसकी विवशता बढ़ती ही जाती है। आखिर वह दोनों से दूर रहने की कोशिश करता है।

चंद्रमाधव 'नदी के द्वीप' का खलनायक है। वह मानसिक दृष्टि से कुंठित पात्र है। चंद्रमाधव रेखा और गौरा की सहानुभूति पाने की कोशिश करता है। रेखा और गौरा दोनों भुवन पर आसक्त देखकर वह मन ही मन भुवन पर जलता है। रेखा और गौरा को पाने के लिए अपना हर मायावी जाल फेंकता है लेकिन हर बार असफल ही रहता है। इस प्रकार चंद्रमाधव एक मनोवैज्ञानिक खलनायकी पात्र है।

रेखा 'नदी के द्वीप' की नायिका तथा भुवन की प्रेमिका है। उपन्यास की संपूर्ण कथा इसी रेखा के पूरे चारों ओर गुँथी हुई दिखाई पडती है। रेखा ऐसी प्रेमिका है जो भुवन और गौरा के बीच बाधक न बनकर सेतु बनने का काम करती है। वह एक स्वाभिमानी स्त्री है। भुवन के लिए वह खुद का आत्मोत्सर्ग कर देती है। इस प्रकार रेखा शिक्षित और समर्पणशील नायिका है।

'नदी के द्वीप' उपन्यास में अज्ञेय जी को रेखा से भी अधिक सफलता गौरा के चरित्र में मिली है। गौरा स्वयं को दुःखों में डुबाकर दूसरों को हँसते हुए देखने में ही ज्यादा खुशी मानती है। अपने गुरू के प्रति आसक्त होकर भी वह भावना कभी भी व्यक्त नहीं करती। गौरा सुसंस्कृत, विनयशील, विचारशील, प्रतिभासंपन्न और अपनी मन की इच्छा को मन में दबानेवाला पात्र है। इसी कारण पाठक की सहानुभूति गौरा के प्रति परिलक्षित होती है। भुवन, चंद्रमाधव, रेखा और गौरा इन पात्रों की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के द्वारा अज्ञेय ने 'नदी के द्वीप' उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला है।

'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास में सेल्मा और योके इन प्रमुख स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास नारी प्रधान उपन्यास है। योके के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के बाद यह स्पष्ट होता है कि वह पश्चिमी संस्कृति का प्रतीक है। वह अनास्थावादी, क्षणवादी तथा कुंठित पात्र है। आस्थावादी सेल्मा के साथ रहकर धीरे-धीरे उसे आस्थावाद में विश्वास होने लगता है। योके आखिर आस्थावादी जगन्नाथन् की बाहों में दमतोड देती है। सेल्मा मृत्यु की दहलिज पर खडी, जीवन की अंतिम साँसे गिनती हुई दिखायी देती है। फिर भी वह आस्था से जीवन बिताती है। सेल्मा भारतीय संस्कृति का प्रतीक पात्र है। सेल्मा एक कुंठित पात्र है। इन पात्रों के द्वारा 'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला गया है।

अंत में हम कह सकते हैं कि अज्ञेय जी ने अलग-अलग किस्म के तीन उपन्यास लिखे हैं। लेकिन तीनों का प्राणतत्व एक ही रहा है और वह है मनोविज्ञान। अपने हर पात्रों को मनोवैज्ञानिक ढंग से पाठकों के सामने प्रस्तुत कर उपन्यासों की मनोवैज्ञानिकता पर

प्रकाश डाला है। इसमें अज्ञेय जी को अपेक्षित सफलता अवश्य मिली है। यहाँ तक कि आगे आनेवाले मनोवैज्ञानिक रचनाकारों के लिए प्रेरणा भी जरूर मिलेगी।

उपलब्धियाँ :

उपर्युक्त विवेचन-विश्लेषण के बाद शोध कार्य के उद्देश्य की पूर्ति इस प्रकार हुई -

1) जीवन का विकास मनोविकारों पर आधारित है और मनोविकार का आधार मनोविज्ञान है। मन अदृश्य है, अस्पष्ट है, विवादास्पद एवं अनुमानित है। उसकी स्थिति का पता मनुष्य के व्यवहार से लगता है।
2) अज्ञेय जी के तीनों उपन्यासों में पात्रों के मन की आंतरिक भावनाओं पर प्रकाश डालने का प्रमुख उद्देश्य रहा है- स्वातंत्र्य की खोज। शेखर, शशि, भुवन और रेखा जैसे असाधारण पात्रों की सृष्टि करके उनके आंतरिक भावनाओं से समाज में व्याप्त रूढ़िगत परंपराओं का मूलोच्छेदन करके नये समाज की स्थापना महत्वपूर्ण सोच है।
3) हमारे मन में उठनेवाले अनेक भावों के संघर्ष और अज्ञेय के उपन्यासों के पात्रों के मन में उठनेवाले संघर्ष एक ही प्रकार के हैं।
4) अज्ञेय के उपन्यासों के स्त्री चरित्रों के साथ-साथ पुरुष चरित्रों को गहराई से नापने के बाद पता चला कि सभी स्त्री पात्र और पुरुष पात्र शिक्षित है। मनोविज्ञान उनका प्राणतत्व है।
5) अज्ञेय के उपन्यासों की मुख्य दुष्टि सामाजिक यथार्थ पर आधृत होने के कारण उसके विभिन्न रुपों और स्तरों के बीच पुरुष और नारी किस प्रकार जीवन यापन कर रही है इसका चित्रण प्रस्तुत किया है।
6) मनोवैज्ञानिकता के स्वरूप विवेचन के बाद तथा विभिन्न विद्वानों की परिभाषाओं को देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि - "मानव मन का विश्लेषक मनोविज्ञान है।"
7) हर रचनाकार के व्यक्तित्व का तथा परिवेश का परिणाम उसकी रचनाओं पर अवश्य होता है। अज्ञेय के भी व्यक्तित्व का प्रभाव उनकी रचनाओं पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

8) मनोविज्ञान के द्वारा ही मानव मन तथा उसके कार्यों को समझा जा सकता है।

9) अपने साहित्य में चित्रित समस्याओं के माध्यम से सारे समाज को उनके प्रति सचेत करना चाहा है।

10)उपन्यासों मे नारी को केंद्र में रखकर विविध विषयों पर विचार मंथन प्रस्तुत किया है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :

1) अज्ञेय के 'शेखर : एक जीवनी' और 'नदी के द्वीप' उपन्यासों का अनुशीलन किया जा सकता है।

2) 'अज्ञेय के उपन्यासों में प्रेम संबंध' इस विषय पर अनुसंधान किया जा सकता है।

3) 'अज्ञेय के उपन्यासों में यथार्थ की परिकल्पना' इस विषय पर अनुसंधान किया जा सकता है।

4) 'अज्ञेय के उपन्यासों की भाषा' इस विषय पर अनुसंधान किया जा सकता है।